BPSC-132: भारतीय सरकार और राजनीति

(ट्यूटर द्वारा मूल्यांकित सत्रीय कार्य)

सत्रीय कार्य कोड: BPSC-132/ASST/TMA/2026-27

अंक: 100

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

(2 × 20 = 40 अंक)

1 भारतीय राजनीति के अध्ययन के लिए उदारवादी, मार्क्सवादी और गांधीवादी उपागमों की तुलना कीजिए।

2 भारतीय राजनीति के साथ जाति, वर्ग, जनजाति और लिंग के संबंधों का परीक्षण कीजिए।

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए।

(3 × 10 = 30 अंक)

3. भारतीय संविधान की मूल विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।

4. भारतीय विधायिका की संरचना और कार्यों की व्याख्या कीजिए।

5. भारतीय राजनीति में प्रतिस्पर्धी प्रवृत्तियों के रूप में, धर्मनिरपेक्षता और सांप्रदायिकता का परीक्षण कीजिए।

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए।

(5 × 6 = 30 अंक)

6. मौलिक अधिकार

7. राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत और मौलिक कर्तव्य

8. भारतीय कार्यपालिका

9. भारतीय राजनीति में श्रमिक और किसान

10. भारत में दल और दलीय व्यवस्थाएँ

1 भारतीय राजनीति के अध्ययन के लिए उदारवादी, मार्क्सवादी और गांधीवादी उपागमों की तुलना कीजिए।

उत्तर

भारतीय राजनीति का अध्ययन केवल चुनाव, सरकार और संविधान तक सीमित नहीं है। इसमें राज्य की प्रकृति, सामाजिक असमानता, जनभागीदारी, संघर्ष, स्वतंत्रता तथा राजनीतिक परिवर्तन भी शामिल हैं। इन प्रश्नों को समझने के लिए उदारवादी, मार्क्सवादी और गांधीवादी उपागम अलग-अलग दृष्टि प्रदान करते हैं। उदारवादी दृष्टि संस्थाओं, अधिकारों और संवैधानिक प्रक्रियाओं पर बल देती है; मार्क्सवादी दृष्टि आर्थिक संरचना एवं वर्गीय संबंधों को महत्त्व देती है; जबकि गांधीवादी दृष्टि राजनीति के नैतिक आधार और विकेन्द्रीकृत स्वशासन को प्रमुख मानती है। इनकी तुलना करने से भारतीय लोकतंत्र की उपलब्धियाँ और सीमाएँ दोनों सामने आती हैं।

उदारवादी उपागम : संस्थाएँ, अधिकार और बहुलवाद

उदारवाद व्यक्ति की स्वतंत्रता, कानून के शासन, राजनीतिक समानता और प्रतिनिधि लोकतंत्र को केंद्रीय मूल्य मानता है। इस दृष्टिकोण से भारतीय संविधान, संसद, न्यायपालिका, कार्यपालिका, चुनाव आयोग और राजनीतिक दल ऐसी संस्थाएँ हैं जिनके माध्यम से हितों का प्रतिनिधित्व और परस्पर मतभेदों का समाधान होता है। शक्तियों पर संवैधानिक सीमाएँ तथा नागरिकों के मौलिक अधिकार सत्ता के मनमाने प्रयोग के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करते हैं। स्वतंत्र प्रेस, नागरिक समाज और न्यायिक समीक्षा भी इसी संस्थागत व्यवस्था के महत्त्वपूर्ण अंग हैं।

उदारवादी विश्लेषण इस बात का अध्ययन करता है कि चुनाव कैसे होते हैं, सत्ता का हस्तांतरण किन प्रक्रियाओं से होता है, दबाव समूह नीति निर्माण को किस प्रकार प्रभावित करते हैं और विभिन्न समुदाय लोकतांत्रिक संस्थाओं में अपनी माँग कैसे रखते हैं। भारतीय राजनीति में सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार, संसदीय शासन, संघीय ढाँचा, सार्वजनिक बहस तथा न्यायालयों तक पहुँच इस दृष्टिकोण के प्रमुख उदाहरण हैं। सामाजिक विविधता को यह प्रतिस्पर्धी हितों और बहुलतावादी बातचीत के संदर्भ में समझता है।